ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -18 अंक - 10 अगस्त- II, 2017 पाक्षिक माउण्ट आबू रु. 8.00

'गीता' योग शास्त्र है युद्ध शास्त्र नहीं

- योग ध्यान ही गीता का सच्चा मर्म - डॉ. नागेन्द्र
- पवित्रता ही सुख-शान्ति का आधार - स्वामी जीवन देव जी महाराज
- अपने स्त्य स्वरूप की पहचान न होना ही दु:ख का मूल कारण - आचार्य कर्मा तानपाई

ओ.आर.सी.-गुरूग्राम। ब्रह्माकुमारीज़ के ओम् शान्ति रिट्रीट सेन्टर में भगवद् गीता विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इस अवसर पर देश के अनेक विद्वान, आचार्य एवं महान विचारक उपस्थित रहे। कार्यक्रम के प्रारंभिक सत्र में विवेकानन्द योगा अनुसंधान संस्थान,बैंगलुरू के अध्यक्ष

डॉ. नागेन्द्र ने कहा कि योग और ध्यान ही भगवद्गीता का असली सार एवं मर्म है। उन्होंने कहा कि भगवद्गीता एक योग शास्त्र है न कि हिंसा का शास्त्र। वास्तव में गीता में वर्णित युद्ध मनुष्य के आंतरिक बुराइयों एवं अवगुणों को समाप्त कर दैवी गुणों को धारण करने का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि योग को स्कूली स्तर से विश्व-विद्यालय स्तर तक लागू करने से ही परिवर्तन संभव है।

यातिधाम वृन्दावन से आये स्वामी जीवन देव महाराज जी ने बताया कि जीवन में आंतरिक एवं भौतिक पवित्रता का बहुत बड़ा महत्व है। पवित्र जीवन के आधार पर ही सुख-शान्ति का अनुभव हो सकता है। उन्होंने कहा कि दिव्य-गुणों को अपनाने से हम दुखों से मुक्त हो सकते हैं।

नेपाल से आये अंतर्राष्ट्रीय धर्मगुरू आचार्य कर्मा तानपाई ने अपने सम्बोधन में कलियुग को अज्ञान अंधकार का समय बताते हुए कहा कि ऐसे समय पर ही वास्तव में ज्ञान सूर्य परमात्मा के दिव्य अवतरण की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि अपने वास्तविक स्वरूप की अनभिज्ञता ही वास्तव में दु:खों का मूल कारण है।

कार्यक्रम के मुख्य संयोजक राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन ने संगोष्ठी के मुख्य उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहा कि गीता के सही अर्थ को न जानने के कारण ही आज मानव असमंजस में है। उन्होंने कहा कि अगर हम गीता के सही महत्व को जान जाएं तो विश्व में एक बहुत बड़ा परिवर्तन आ सकता है। उन्होंने लोगों से आग्रह किया कि काम वासना सहित सभी विकारों पर विजय प्राप्त करने का सहयोग दें। उन्होंने कहा कि गीता में परमात्मा ने कई बार काम विकार को सभी पापों का मूल बताया है।

ओ.आर.सी. की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा ने स्वास्तिका को कल्प के चारों युगों की अवधि का प्रतीक बताते हुए कहा कि सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग तथा कलयुग, मनुष्य का बेहतर जीवन से कम बेहतर और द्वापर के बाद गिरावट के रास्ते पर चलने का काल चक्र है। उन्होंने कहा कि अब कलयुग के अन्त में परमात्मा का अवतरण हुआ है फिर से मानव को दानव से देव बनाने के लिए, ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग के बल से। कार्यक्रम में आए मेहमानों का स्वागत करते हुए उन्होंने कहा कि आप जैसे महान एवं प्रबुद्ध जन ही गीता के असली रहस्य को लोगों तक पहुँचा सकते हैं।

भगवद्गीता विषय पर आयोजित संगोष्ठी में अपने विचार रखते हुए ओ.आर.सी. की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा।

भागवद्गीता पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में देश भर के विद्वान हुए एकमत - कहा, गीता ज्ञान से ही होगा सतयुगी दुनिया का निर्माण

उर्दू प्रेस के प्रसिद्ध स्तम्भकार डॉ. मुज़फ्फर हुसैन गज़ाली ने कहा कि यही अति धर्मग्लानी का समय है जब इसका अन्त करने के लिए तथा एक बेहतर जीवन और समाज का निर्माण करने के लिए खुदा का धरा पर आना होता है, यही गीता का मूल संदेश भी है।

ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय,माउण्ट आबू से आयीं गीता स्कॉलर राजयोगिनी ब्र.कु. ऊषा एवं जबलपुर से भगवद्गीता की व्याख्याता डॉ. पुष्पा पाण्डे ने भगवद्गीता पर देश के अनेक प्रान्तों से आए हुए गीता विशेषज्ञों से विचार-विमर्श किया। सभी ने इस विषय पर सहमति जताते हुए कहा कि वास्तव में गीता में वर्णित युद्ध कोई भौतिक नहीं अपितु मन का अन्तर्द्वन्द्व है। सभी ने स्वीकार किया कि गीता का ज्ञान परमात्मा शिव ने कलियुग के अन्त में सतयुगी दुनिया की स्थापना के लिए दिया। सभी ने ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा दी जा रही आध्यात्मिक शिक्षा एवं राजयोग ध्यान को परमात्मा के द्वारा दिए जा रहे वास्तविक गीता ज्ञान व योग का व्यवहारिक स्वरूप कहा।

राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग, भारत सरकार के पूर्व अध्यक्ष जस्टिस वी. ईश्वरैया ने कहा कि गीता हमें अहिंसा परमो धर्म की प्रेरणा देती है। गीता को उसके सही संदर्भ में जानने की आवश्यकता है।

सम्मेलन के मुख्य संयोजक पत्रकार वेलफेयर एसोसिएशन के अध्यक्ष राजीव निशाना ने लोगों तथा समाज में गिरते हुए नैतिक स्तर पर चिन्ता व्यक्त की और कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था लोगों की नैतिकता और चरित्र निर्माण की दिशा में सराहनीय कार्य कर रही है।

संगोष्ठी में विशेष रूप से उत्तराखण्ड संस्कृत विश्व-विद्यालय हरिद्वार के पूर्व उप-कुलपति प्रो. महावीर अग्रवाल, श्री जगतनाथ संस्कृत विश्व-विद्यालय के पूर्व उपकुलपति प्रो. अलेख चन्द्र सारंगी, कुरूक्षेत्र संस्कृत विश्व-विद्यालय के संस्कृत विभाग के प्रमुख डॉ. एस.एम. मिश्रा, उत्कल विश्व-विद्यालय के पूर्व उप-कुलपति प्रो. बिनायक रथ, न्यू दिल्ली टाइम्स की प्रमुख संपादक डॉ. प्रमिला श्रीवास्तव आदि मान्यवरों ने उपस्थित रहकर अपने अपने विचार व्यक्त किये।

भारत के राष्ट्रपति महामहिम राम नाथ कोविंद को बधाई एवं शुभकामनाएं देने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ओ.आर.सी. निदेशिका ब्र.कु. अशा तथा खानपुर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. आशा।